सत्य एँव अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय खिस्त

लेमेन इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल। (LEFI,Chennai)

नवम्बर-दिसम्बर, 2002

बूढ़ा वैरागी जगत का उद्धारकर्ता

'कोरी टेन बूम' एक बूढ़े वैरागी की इस कहानी को बहूदा सुनाया करती थी, जो हर क्रिसमस की पूर्व शाम को मठ में अपने भाइयों और पास के गॉव से आने वालों को क्रिसमस अराधना के समय गीत सुनाया करता था। उसका स्वर बहुत ही भद्दा था। लेकिन वह प्रभु यीशु से बेहद प्रेम करता था, इस कारण पूरा मन लगा कर गाया करता था। एक साल मठ के प्रबंधक ने कहा,' मुझे माफ करना, भाई डान, इस क्रिसमस के अवसर पर हमें तुम्हारी आवश्यकता नहीं है। एक नया चेला आया है और उसकी आवाज़ बेहद मधुर है।'

उस आदमी ने बड़ी सुन्दरता से गाया और सभी खुश थे। लेकिन उस रात एक स्वर्गदूत वरिष्ठ वैरागी के पास आया और बोला, 'तुम लोगों ने क्रिसमस की पूर्व संध्या पर गीत क्यों नहीं गाया?'

वरिष्ठ वैरागी को बड़ा अश्चर्य हुआ, 'हमने एक बहुत ही मधुर गीत गाया, 'उसने जवाब दिया,'क्या तुमने सुना नहीं?'

स्वर्गदूत ने दुखी होते सिर हिलाया, 'वह तुम्हारे लिए प्रोत्साहन का कारण रहा होगा, लेकिन वह स्वर्ग में हमें सुनाई नहीं दिया।'

बूढ़ा वैरागी...पृष्ठ २ पर....

मृत्युंजय खिस्त
ON LINE

By Email:
post@lefi.org

At our Web Site:
http://lefi.org

लूका(२:३४) - शमौन ने उन्हें आशीष देकर यीशु की माता मरियम से कहा, 'देख, यह बालक इस्राएल में बहुतों के पतन, व उत्थान का कारण और ऐसा चिन्ह होने के लिए ठहराया गया है जिसका विरोध किया जाएगा।'

यूसूफ और उसकी पत्नी मरियम को इन बातों से जो उसके विषय में बोलीं गई थी बड़ा अश्चर्य हुआ। एक के बाद एक घटना उस नन्हें शिशु के विषय में उजागर हों रहीं थी और एक नयी जिम्मेवारी का बोध भी करवा रही थीं। एक महान पुत्र एक बड़ी जिम्मेदारी होता है। माता-पिता आत्मिक तौर पर जागरूक और योग्य होने चाहिए। ऐसा मत

सोचो कि ये माता-पिता अचानक संसार में बड़े विरले लोगों में से हो गए। उनके प्रशिक्षण में काफी ध्यान लगा था। ऐसे गुणों का घर अचानक ही बनाया नहीं जा सकता। उनकी इच्छाएँ और लक्ष्य स्वर्ग की ओर थे। उनकी जवानी का समय बड़ा अलग था।

ऐसे मत मानो कि यीशु के परिवार का माहौल ऐसा हो मानो एकाएक बना दिया गया हो। माता-पिता साधारण लोग थे। जीवन की उपलब्धि और प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि जवानी के दिनों में जीवन की कैसी नींव बनाई गई है। लापरवाही में जवानी बिताने के बाद, तुम एक आत्मिक घर नहीं बना सकते हो। मैं मरियम और यूसुफ की सादगी और महानता पर विस्मित होता हूँ। कितनी असीम, गौरवशाली और पवित्र कहानी है इस घर की। एक मसीह के लिए इस कहानी में महान खजाना उपलब्ध है।

यरूशलेम में एक व्यक्ति था जिसका नाम शमौन था। इससे पहले हम उसके बारे में नहीं सुनते। वह एक सन्त व्यक्ति रहा होगा। वह धर्मी और न्यायी था। ४०० साल से इस्राएल में कोई नबी नहीं हुआ था। यह व्यक्ति परमेश्वर के महान वरदान के पूरा होने की प्रतिक्षा में था। हरेक व्यक्ति जो परमेश्वर के वचन को पढ़ता है और उसका मनन करता है, वह परमेश्वर के विचारों की झलक पाएगा। आत्मिक शक्ति की प्रगति दूसरों के विचारों को पढ़ने में सहायता करती है। प्रार्थना न केवल दूसरों को पढ़ने में हमारी सहायता करती है बल्कि परमेश्वर के विचारों को जानने में भी हमारी सहायता करती है। नबूवत कुछ ओर नहीं बल्कि परमेश्वर के विचारों को देखना है। जब तुम्हारा हृदय शुद्ध होता है और तुम इसे परमेश्वर के वचन से भरते हो, तुम परमेश्वर के साथ मिलकर भविष्य में देखोगे। तुम्हारे अंदर आत्मिक आर्कषण पैदा होगा, जो लोगों को तुम्हारी और खींचेगा। शमौन नन्हें यीशु को अपने हाथों में लेकर कितना खुश हुआ। मसीह जगत में उद्धारकर्ता के रूप में आया है। वह ऐसी ज्योति है जो गैरयहूदियों को प्रकाशन देती है। इस वृद्ध व्यक्ति ने उस दुख के समय की नबूवत(भविष्यवाणी) की, जिसका यीशु की माँ को सामना करना पड़ेगा। ऐसा प्रतीत होता है मानो शमौन को क्रूस(सूली) की वेदना स्पष्ट दिखाई पड़ रही थी। साढ़े तीन वर्ष की गौरवशाली सेवकाई के बाद यीशु क्रूस पर लटकेगा। मुझे यह समझ में नहीं आता कि इस माँ ने यह कैसे सहा होगा।

परमेश्वर के वचन का अध्ययन तुम्हें सही प्रकार की आत्मिक प्रगति देगा। एक ऐसी भी

.....जगत का उद्धारकर्ता ...पृष्ठ २ पर

....जगत का उद्धारकर्ता...पृष्ठ १ से

आत्मिक तरक्की है, जो हमारे मन में घमंड पैदा करती है। इससे सावधान रहो। ऐसी बात उनके साथ नहीं होती जो परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं। शमौन तो इस्राएल के छुटकारे की प्रतीक्षा कर रहा था। हमें प्रार्थना करते हुए कलिसिया की सामर्थ बढ़ानी चाहिए। कलिसिया उपयोगी और सामर्थी बननी चाहिए। हमारी कलिसियाओं की सही प्रकार की प्रगति होनी चाहिए और सच्चे परमेश्वर के जन पैदा होने चाहिए। केवल अपने विषय में मत सोचो। सबसे पहले तुम्हें अपने आत्मिक जीवन को सुरक्षित करना चाहिए। तब तुम्हें इस बात की अपेक्षा करनी चाहिए कि कलिसिया में परमेश्वर के महान कार्य हों। जब हम प्रचार करें, तो लोगों को दण्डवत होकर परमेश्वर के सामने गिरना चाहिए। लोग, परिवार और कलिसियाएँ परमेश्वर की ओर फिरनी चाहिए।

शमौन आत्मा के द्वारा ठीक उसी समय मंदिर में पहुँचा जब यीशु मंदिर में पहुँचे। इसी तरह से आत्मा अगुवाई करता है। आत्मिक जीवन एक विशेष जीवन है। संसार नबूवत करने वाले लोगों को देखने का भूखा है। जब तुम नबूवत करोगे तो लोग परमेश्वर की अराधना करेंगे। वे जान लेंगे कि परमेश्वर तुम्हारे द्वारा बोल रहे हैं। जब तुम आत्मिक जीवन में आगे बढ़ते हो और अपने प्रार्थना के जीवन में, परमेश्वर तुम्हें ऐसी सामर्थ देंगें कि लोग अपने पाप को स्वीकार करने लगेंगें जैसी ही वे तुम्हारे घर की और आ रहे होंगे। तुम आलौकिक शक्ति से भरे होंगे। शमौन परमेश्वर के आत्मा से परिपूर्ण था। उसकी नबूवत द्वारा एक परिवार दृढ़ हुआ, जो उन घटनाओं को समझ सका, जो इतने अद्‌भुत रूप से उनके जीवन में इतनी जल्दी घट रहीं थीं। तुम्हारे आत्मिक जीवन के गुण का स्तर बहुत ऊँचा होना चाहिए।
- एन दानियल।

.....बूढ़ा वैरागी...पृष्ठ १ से

'देखा तुमने', कोरी बोली,' उस बूढ़े वैरागी की मोटी आवाज़ के साथ उसका प्रभु यीशु के साथ व्यक्तिगत नाता था, लेकिन वह युवा वैरागी केवल अपने लाभ के लिए गा रहा था, प्रभु के लिए नहीं।'
- चुना हुआ।

उसने अपना एकलौता पुत्र बलिदान कर दिया

एक बार फिर क्रिसमस का समय अपनी कोमलता और महान अर्थ के साथ निकट आ रहा है। आइये एक बार इस युद्ध के घावों भरे और पाप के शिकंजे में इस दुखी सांसारिक दृश्य के विपरीत, सादे और आभार भरे मन से बाइबल के उस महान पद को पढ़ें - युहन्ना (३:१६) 'क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।'

'उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया।' प्रेम का माप तो दूसरे से बांटने की इच्छा से होता है - त्याग की क्षमता। यदि हम परमेश्वर के प्रेम को मापें, तो कलवरी के द्वारा ही हमें इसे मापना चाहिए। किसी ने प्रेम की व्याख्या ऐसे की है -

प्रेम हमेशा देता है, क्षमा देता है, आगे बढ़ता है;
और हमेशा खुली बाहों से खड़ा होता है,
और जब तक जीवित है, देता रहता है,
और जब जीवित है तो देता है,
और देने के लिए जीवित है,
और प्रेम का यह परमाधिकार है,
देता जा और देता रह और देता रह।

यह वास्तव में परमेश्वर के प्रेम के विषय में सत्य है। यह अपने त्याग में प्रत्यक्ष होता है, और इसलिए माप-तौल से परे है। कलवरी की कीमत परमेश्वर के लिए कितनी भारी थी, हम इसका अनुमान भी नहीं लगा सकते और न ही हम उसके प्रेम की थाह पा सकते हैं, जो उसके पीछे छिपा है। हम केवल इस शब्द 'इतना' पर अपना ध्यान रख सकते हैं। ' परमेश्वर ने इतना प्रेम किया.... कि अपने एकलौते पुत्र को दे दिया।'

हम यह जानते हैं, पिता और पुत्र में इतनी एकता थी कि पुत्र को देने में(प्रायश्चित बलि के रूप में) पिता ने अपने आप को अर्पित कर दिया, क्योंकि 'परमेश्वर मसीह में था, संसार का अपने से समझौता करवाने में' २ कुरंथियों(५:१९), प्रभु यीशु केवल इस संदेश का माध्यम नहीं हैं कि परमेश्वर ने हम से कितना प्रेम किया। वह स्वंय परमेश्वर था, जो हमें प्रेम करते हुए धरती पर आया। वह केवल परमेश्वर के प्रेम की घोषणा या व्याख्या नहीं करता है, वह परमेश्वर के प्रेम का अवतार है। हम 'इतना' इस अनुप्रास के साथ क्या क्रिया-विशेषण लगाएँ। ' परमेश्वर ने इतना प्रेम - इतनी पूर्णता से, इतना असीम, इतना उत्कृष्ट। लेकिन जब हम इस अनुप्रास 'इतना' के बाकी के वाक्य को देखते हैं, इन शब्दों में 'कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे(बलिदान) दिया।' और जब हम इस रहस्यमय तथ्य को देखते हैं कि पिता ने सनातन पुत्र दे दिया, न केवल कलपना से परे कलवरी का घोर दुख, बल्कि अपने दिव्य स्वरूप को मानव के देह में संकुचित कर दिया, एक वास्तविक मानुषी जन्म, ताकि वह हमेशा के लिए मनुष्य का पुत्र कहलाए और साथ ही साथ परमेश्वर का पुत्र, हम केवल विस्मित ही हो सकते हैं, 'परमेश्वर का अवर्णनीय प्रेम...' भाषा इसकी व्याख्या में असफल होती है। हम विस्मय, प्रेम और उसकी स्तुति में खो जाते हैं।

हाँ, क्रिसमस एक बार फिर आ रहा है। अपनी सोच में हमें, 'बैतलेहम' और 'गोलगता' को अलग या 'शिशु के पालने' को 'क्रूस' से अलग नहीं करना चाहिए। बिना मनुष्य के रूप में अवतार लिए, कभी भी प्रायश्चित संभव नहीं था और प्रायश्चित के बिना अवतार संभव नहीं था और परमेश्वर के असीम प्रेम के बिना दोनों ही संभव नहीं थे। हमें मृग और कृतिका नक्षत्र अपने भव्य रोशनी में बड़े अद्‌भुत नज़र आयें, लेकिन जिस महान बात को हम अपने सृष्टिकर्ता के विषय में जानते हैं, वह केवल यह है, ' परमेश्वर ने इतना प्रेम किया.... कि अपना एकलौता पुत्र दे(बलिदान) दिया।'
- सिडलो बेक्सटर।

पूर्वी देश की चरनी

ब्रिटिश 'जेफरी टी बुल', तिब्बत का मिश्नरी, ठंड का मारा, थका और भूखा था। वह उन साम्यवादियों द्वारा पकड़ा हुआ था जिन्होंने १९४९ में चीन पर काबू कर लिया था, उसका भविष्य बड़ा धुंधला दिख रहा था। उसके बन्दी बनाने वाले दिन रात उसे बर्फ से जमें हुए पहाड़ों पर ले कर भाग रहे थे, जब तक की वह जीने की चाह से हार चुका था। एक देर दुपहरी, उसने लड़खड़ाते हुए एक गांव में प्रवेश किया जहाँ उसे उपरी मंजिल पर ठहरने के लिए एक कमरा दिया, साफ सुथरा और कोयले की अंगीठी द्वारा गर्म किया हुआ।

थोड़ा सा खाना खाने के बाद, उसे घोड़े चराने को नीचे भेजा। वहाँ बहुत ठंड और अंधेरा था। उसने बड़ी कठिनाई से एक लकड़ी के सहारे से गहन अंधेरे में रास्ता टटोला। उसके जूते गोबर और धरती पर बिखरे भूसे में पड़ रहे थे। जानवरों की दुर्गंध से उसे उबकाई आ रही थी। घोड़े भी थके हुए सांस भर रहे थे, पूंछ लटकी हुई थी, लेकिन मिश्नरी को किसी भी क्षण दुल्ती पड़ने का आसार नज़र आ रहा था। जैफरी, ठंड का मारा, थका हुआ, एकाकी और बिमार, उसे अपने ऊपर दया आने लगी।

'जब मैं अंधेरे में अपना रास्ता टटोल रहा था, 'उसने बाद में लिखा, 'अचानक मेरे दिमाग में कौंधा। आज कौन-सा दिन है? मैंने एक क्षण के लिए सोचा। यात्रा के कारण मेरे दिमाग में सप्ताह के दिनों की गड़बड़ी हो गई थी। अचानक मुझे ध्यान आया! यह क्रिसमस की पूर्व संध्या है। मैं उस पूर्वी देश की चरनी में चुपचाप खड़ा हो गया। यह सोचते हुए कि मेरा उद्धारकर्ता (यीशु मसीह) ऐसे ही स्थान पर पैदा हुआ था। यह सोच कर कि वह स्वर्ग को छोड़ कर इस गंदी पूर्वी चरनी में आया और इस बात के सोचने के बाद कि वह मेरे लिए यहाँ आया, कुछ बाकी नहीं बचा था। लोग कैसे बच्चे के पालने और चरनी को खूबसूरत बना कर दर्शाते हैं, मानो इस सच्चाई को छिपाने की कोशिश कर रहे हों कि हमने उसके जन्म पर उसे इन जानवरों की दुर्गंध में छोड़ दिया हो और मृत्यु पर अपराधियों की शर्म का बागी बना दिया।'

'मैं अपने उस साफ और गर्म कमरे में वापस आया जो एक बंदी होते हुए भी मुझे उपलब्ध था, आभार और यीशु की अराधना में मैंने अपना सिर झुकाया।'

-चुना हुआ।

तुम्हें केवल यही चाहिए।

एक महिला लंदन में एक दिन अपनी एक मित्र को पेडींगटन स्टेशन पर विदा करने आई, जो शहर छोड़ कर जा रही थी। जब ट्रेन चली गई तो यह महिला अपने घर वापस लौटने लगी। उसने बस पकड़ी और कुछ ही क्षण में कंडक्टर ने आकर उससे किराया माँगा। उसे बड़ा अश्चर्य हुआ, जब उसने पाया कि उसका बटुआ खो गया है। कंडक्टर ने उसे उतर जाने को कहा।

वह एक गर्म सुबह थी। वह अपने घर से मीलों दूर थी। अब वह क्या करे? हाइड पार्क की ओर आकर वह एक बेंच पर बैठ गई। वह बड़ी अजीब परिस्थिति में थी, लेकिन - परमेश्वर वहाँ थे। वह उसे इसके विषय में बताएगी।

अपने थैले में से जब उसने नये नियम को निकाल कर खोला और पढ़ा - फिलीपियों (४:१९) - मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित यीशु में है तुम्हारी प्रत्येक आवश्यकता पूरी करेगा।

उसकी 'ज़रूरत' उस समय केवल छह पैसे थी। उसने आँखें बन्द की और इस वचन के अनुसार वरदान माँगा, एकदम उसे इस बात का भरोसा हो गया कि उसकी ज़रूरत पूरी की जाऐगी। कैसे पूरी होगी, उसे पता नहीं था, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता - परमेश्वर जानते थे।

वह ज़मीन पर मिट्टी में अपने छाते से लिखने लगी। उसने यह शब्द लिखे - ' परमेश्वर प्रेम है।' वह जैसे ही 'है' शब्द को पूरा कर रही थी, अचानक उसके छाते की नोक ने एक छह पैसे का सिक्का पलटा। उसका मन ज़ोर से उछला। उसकी ज़रूरत पूरी की गई। उसने अपना सिर झुकाया और परमेश्वर को धन्यवाद दिया। वह उठी और जल्दी से बस पकड़ने के लिए चली। जब कंडक्टर ने किराया माँगा, उसने उसे छह पैसे दिये। वह उस सिक्के को ध्यान से परखने लगा।

'यह खरा है।' महिला ने कहा,' यह ज़मीन में गड़ा हुआ था। मैं अपना बटुआ खो बैठी थी और मुझे घर वापस पहुँचने के लिए छह पैसे की ज़रूरत थी। मैंने अपने स्वर्गीय पिता (परमेश्वर) से पैसा भेजने को कहा, और उन्होंने भेजा। मैं हाइड पार्क में छाते की नोक से मिट्टी में लिख रही थी। 'परमेश्वर प्रेम है' और मेरे छाता उस सिक्के से जा टकराया।'

कंडक्टर उसे अश्चर्य से देखने लगा,'मेरी इच्छा है,' उसने कहा, 'परमेश्वर मुझे भी ऐसे ही जवाब दे।' लेकिन मैं अब वैसा नहीं हूँ, जैसा पहले था। मैं अब रविवार को कलिसिया नहीं जाता। मैं अपने कलिसिया में सामूहिक गायन दल में गाता था। मैं अब विवाहित हूँ और अब हम अपने छुट्टी वाले रविवार पार्क में बिताते हैं।

'ओह', महिला ने कहा,' वापस परमेश्वर के पास ज़रूर आ, उसके साथ अपने संबंध को सही कर। परमेश्वर प्रेम है।'

और अधिक कहने का समय नहीं था। जब बस उस स्थान के निकट पहुँची, जहाँ उस महीला को उतरना था, वह उस कंडक्टर के पास से गुज़रते हुए फुसफुसाई और बोली, 'परमेश्वर के सामने पश्चाताप कर। मैं तेरे लिए प्रार्थना करूंगी।'

उसने अपने वादे को निभाया और प्रतिदिन उस व्यक्ति और उसकी पत्नी के लिए प्रार्थना करती रही।

एक सुबह, कुछ सप्ताह पश्चात, वह महिला किलबर्न स्थान पर बस से जा रही थी। उसने कंडक्टर की ओर देखे बिना उसके हाथ में किराया थमाया।

'माफ कीजिए, बहनजी,' उसने कहा,' क्या आप ही वह महिला हैं जो मेरे लिए प्रार्थना कर रहीं थीं?'

एक ही क्षण में उसने उस व्यक्ति को पहचान लिया। 'हाँ,' उसने जवाब दिया,'मैं ही हूँ।'

'ओह', उसने कहा,'मैं आपको देख कर खुश हुआ। मैं आपकी छह पैसे वाली कहानी को नहीं भूला था। अति उत्तम बात तो यह हुई, मैंने परमेश्वर के सामने पश्चाताप किया और अब मेरी पत्नी ने भी मन फिराया। हम अपने नन्हें लड़के को भी कलीसिया लेकर जाते हैं और हमनें उसे परमेश्वर को समर्पित कर दिया है।'

उस आदमी ने इतनी सच्ची खुशी से यह सारी बातें बताई कि इस महिला का मन परमेश्वर के प्रति आभार से भर गया।

- चुना गया।

सत्य की परख!

युहन्ना (३:१६) 'क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।'

पृष्ठ ३

जीवन की भेंट

१९१० के साल, क्रिमसम के त्यौहार के समय, देश में जिसका पुराना नाम चैकोस्लोवाकिया था, एक भयंकर माहामारी फैली। वह काली खाँसी की बिमारी (गले की जानलेवा बिमारी) थी और उसने वैलकी स्लावहोव नामक छोटे से गाँव में तबाही फैला दी थी। लगभग आधे गाँव में यह संक्रमण रोग फैल गया और इस बिमारी का शिकार अधिकतर दस
साल की उम्र से कम के बच्चे थे। जैसे ही किसी परिवार के सदस्य को इम रोग के लक्षण नज़र आते, उस घर की चौखट पर बड़ा सा 'ज़' काटे का निशान लगा दिया जाता था। यह लोगों के लिए चेतावनी का सूचक था कि यह घर संघरोधित कर दिया गया है।

जानो और सुज़ैन बोराटकोवा के घर के दरवाज़े पर बड़ा सा 'ज़' काटे का निशान पुता था। एक सप्ताह से कम समय में इस युवा दंपत्ति ने, जिनके तीन बच्चे थे, अपने आप को निसंतान पाया। उनकी ज्येष्ठ पुत्री, जोकि पाँच वर्ष की थी, सबसे पहले गई। और जिस समय जानो एक शवपेटिका तैयार कर रहा था, उसके दो बेटे भी मरने पर थे।

जैसे ही इन दोनों बच्चों ने भी आखिरी सांस छोड़ी, सुज़ैना सुबक-सुबक कर रोने लगी। उसने आखिरी बार अपने दोनों बेटों का शव धोया और सावधानी से कपड़े में लपेटा और हाथ से बनी चीड़ की लकड़ी की शवपेटिका में रखा। उसने और उसके पति जानो ने इन शवपेटिकाओं को उठा कर गाड़ी में लादा और लेकर धीरे-धीरे उस दिसम्बर के महीने की काटने वाली सर्दी में शमशान भूमि की और चल दिये, रास्ते भर कई फुट बर्फ गिरी थी। वे एक के बाद एक 'ज़' काटे के चिन्ह लगे घरों के सामने से गुज़र रहे थे, लेकिन सांत्वना और प्रोत्साहन देने का बल उनमें नहीं था। वे अपने ही दुख के बोझ तले दबे थे।

युवा दंपत्ति ने अपने बच्चों को ताज़ी खोदी हुई कब्र में दफनाया और प्रभु की प्रार्थना को बड़ी कठिनाई से बोलते हुए दफनाने की प्रक्रिया को पूरा किया। और वापस धीमें से गाड़ी पर चढ़े और वापस घर आए। वहाँ उनसे मिलने के लिए कोई नहीं था। उनसे मिलना बहुत खतरनाक था क्योंकि उनका घर संघरोधित कर दिया था। वह डरावना, काला छोटा सा मकबरा बना हुआ था। छोटे ऊँची ऐड़ी के भूरे चमड़े के जूते कतार में लकड़ी के स्टोव के पास अभी भी रखे थे, जैसे उस समय में जब बच्चे आराम से अपने नरम बिस्तरों में होते थे। लेकिन अब वे बिस्तरे खाली थे, घर ठंडा पड़ा था, छाया गहरी और उदासीन।

जानो स्वंय बीमार था। 'मैं अगली क्रिसमस नहीं देख पाऊँगा,' उसने कहा, खांसते और मुश्किल से सांस लेते हुए। 'मुझे नहीं लगता मैं नए साल की शुरूआत भी देख पाऊँगा।' उसने शोरबे और रोटी को परे सरका दिया, क्योंकि रोग के कारण निगल पाना बहुत ही कठिन था। इस गले के रोग ने मानो उसकी गरदन में फाँसी की गाँठ लगा दी हो, न तो खाना और न ही पर्याप्त मात्रा में हवा उसके गले उतरती। सुज़ैना ने रात को जलाने के लिए लकड़ियाँ इक्कठी की, इस बात का निश्चय होते देख कि उसका पति मरने पर था। एक बार दोबारा बर्फ गिरनी आरंभ हो गई थी, उसने एक क्षण के लिए खिड़की के परे देखा। उसका विचार पवित्र बाइबल के इस पद पर गया - भजन संहिता (१२१:१) - 'मैं अपनी आंखें पर्वतों की ओर उठाऊंगा, मुझे सहायता कहां से मिलेगी?'

अचानक उसने किसी को आते देखा, उसने एक देहाती महिला को बर्फ में आते देखा, एक लाल और बैंगनी रंग की शाल द्वारा उसके झुके हुए कंधे ढके थे। उसके सिर पर रूमाल बंधा था और उसका लंहगा सूत और टाट के चटकदार रंगों से भरा दिख रहा था। एक हाथ में उसने एक परदर्शी तरल पदार्थ को बोतल में पकड़ा हुआ था। वह घर के दरवाज़े पर पहुँची और खटखटाया।

सुज़ैना ने सावधानी से दरवाज़ा खोला,'हमारे घर में महामारी है,' उसने कहा, 'और मेरा पति बुखार में पीड़ित है।' बूढ़ी औरत ने सिर हिलाया और इशारे से पूछा कि क्या वह अंदर आ सकती है। उसने उस जार को सामने किया। 'एक साफ सूती महीन कपड़ा ले, अपनी उंगली पर लपेट,' उसने कहा, 'और अपनी उंगली को इस शुद्ध मिट्टी के तेल(घासलेट) में डुबो और उससे अपने पति के गले के अंदर के भाग को साफ कर और फिर उसे एक छोटा चम्मच तेल निगलने को दे। यह उसे इस जानलेवा थूक को उल्टी करने में मदद करेगा। नहीं तो निश्चय ही इसका गला घुट जाऐगा। मैं तुम्हारे और तुम्हारे परिवार के लिए प्रार्थना करूंगी।'

इस पर वह काली खाँसी का घरेलू इलाज छोड़ कर वहाँ से मुड़कर चली गई। सुज़ैना ने उसके दिये हुए निर्देश का पालन किया और क्रिसमस की सुबह जानो ने वह जानलेवा बलगम उल्टी में निकाल दी। उसका बुखार टूटा और सुज़ैना के मन में आशा की किरण फूटी। उस साल घर में क्रिसमस के पेड़ के नीचे कोई उपहार नहीं था। लेकिन वह बूढ़ी महिला और उसकी तेल की बोतल एक जीवन की भेंट थी। जानो समय पर चंगा हो गया। परमेश्वर ने उस दंपत्ति और बच्चे दिये। १९२० में जानो और सुज़ैना ने अमेरिका देश में प्रवास किया - अपने आठ बच्चों के साथ, जिनमें दो जुड़वाँ जोड़े और एक बार में पैदा हुए तीन बच्चे थे। यह कहानी उस परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी सुनाई और याद रखी जा रही है। एक छोटी सी देहाती औरत, जो क्रिसमस की पहली शाम को जीवन की भेंट लेकर आई। यीशु भी उसी तरह हताश दुखी लोगों के लिए जीवन की भेंट लाए। वह यहूदी और गैर यहूदी के लिए आये। वह तुम्हारे और मेरे लिए आये।

- चुना हुआ।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दिजिए।

पृष्ठ ४